# शिया इतिहास की संक्षिप्त रूप रेखा

**आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह**
**अनुवादकः सै० मुहिब्बुल हसन रिज़वी ''समर'' हल्लौरी**

**शीईयत का प्रथम युग**

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद[स०] के समय से मुसलमानों में शिया और अशिया का कोई मत भेद स्पष्ट न हुआ था। फिर भी स्पष्ट रूप से तीन व्यक्ति पवित्र अहलेबैत (रसूलुल्लाह[स०] के घर वाले जिनमें रसूल की सुपुत्री और उनके पति हज़रत अली[अ०] और उन के दो पुत्र हसन व हुसैन सम्मिलित हैं) के पति मुख्य श्रद्धा रखते हुए प्रतीत होते थे यह सलमान, अबूज़र और मिक़दाद थे जो शिया की पदवी सहित मुख्य रूप से प्रसिद्ध हुए। रसूल[स०] की मृत्यु के पश्चात उस समय जब कि संसार (समस्त इस्लामी समाज) राजनीत की धार में प्रवाहित था और रसूल[स०] के घर वालों से दूर हट रहा था, यही वह लोग थे जो एक क्षण के लिए भी रसूल तथा अहलेबैते रसूल[अ०] पर अविश्वास न किया और पैग़म्बर साहब के साथ किए हुए उस प्रण पर क़ायम रहे जो ग़दीरे खुम (एक विशाल मैदान जहाँ अन्तिम हज के अवसर पर रसूल[स०] ने मुसलमानों के एक बड़े सम्मेलन में स्पष्ट रूप से अली[अ०] को अपना सहायक तथा जानशीन घोषित किया था और लोगों ने उन को आज्ञापालन का वचन भी दिया था) में अली के उत्तराधिकारी माने जाने के बारे में किया था। इन लोगों की दृढ़ सद्भावना से प्रभावित हो कर अन्य लोगों ने भी उचित तथा सत्य समझते हुऐ अहलेबैत[अ०] से अपने सम्बन्ध जोड़ लिए इन्हीं में से बारह आदमी वह थे जिन्हों ने जुमे (शुक्रवार) के दिन रसूल की मसजिद में मोमिनों के सरदार हज़रत अली की खिलाफ़त (उन को रसूल का उत्तराधिकारी बनाने और इस्लामी राज्य का मालिक बनने) के अधिकार की सत्यता पर प्रकाश डालते हुए भाषण भी दिए। और बहुमत के मनमाने राज्य सिद्धान्तों एवं शासन के विरूद्ध अनुरोध भी किया। इन में ऊपर लिखे गये तीन नामों के अतिरिक्त शरणार्थियों (मक्के से मदीने चले आने वाले) में से अम्मार बिन यासिर और अनसार (सहायक व्यक्ति जो मदीने के रहने वाले थे), में से उबई बिन काब और खुज़ैमा बिन साबित, द्वबलिदानी और एतिहासिक दृष्टिकोण से यह आचम्भे की बात है कि उमैया गोत्र में से खालिद बिन सईद बिन आस भी इस अनुरोध में सम्मिलित थे। शेष शरणर्थियों तथा सहायक गण में से दूसरे लोग भी थे।

अरब की गोत्रों में से जिस गोत्र का नाम ''मुरतदीन'' (दीन से अलग होने वाला) रखा गया और उन पर यह अपराध लगाया गया कि वे ज़कात (वह रुपया जो मुसलमान अपने माल का चालीसवाँ भाग निकाल करके दान करते हैं) ख़लीफ़ा (उस समय के) को नहीं देते इसलिए उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाए और इस प्रकार उनके हत्याकाण्ड को कर्तव्य जाना गया। इन व्यक्तियों में से बहुधा ऐसे थे जो उस शासन को स्वीकार नहीं करते थे जो पैग़म्बरे ख़ुदा के आदेशों के विरूद्ध स्थापित हुआ था। इस प्रकार शीईयत के चित्र

में मालिक बिन नुवैरा आदि के रक्त की लाली भी मिश्रित हो गई।

**शीईयत की क्रमिक उन्नति**

धीरे-धीरे कुछ तो समय के उलटफेर से कुछ राजनीति का नशा उतरने के कारण, कुछ ऊपर वर्णन किए हुए व्यक्तियों से बातचीत तथा वाद-विवाद के फलस्वरूप में और कुछ उस समय की सरकार के अन्यायों तथा दुर्व्यहवार और बेक़ाएदगियों का अनुभव करते हुए बहुत से व्यक्ति वास्तविक्ता के समीप होते गए और उसमान की ख़िलाफ़त के युग में कुटुम्ब सम्बन्धियों के पालन पोषण की पॉलीसी ने इस झुकाव को और भी शक्ति प्रदान की।

उसमान के विरोधी यद्यपि इन्हीं राजनैतिक कारणों से अधिक्तः उनके मुक़ाबले के लिए तैयार हुए थे किन्तु कुछ व्यक्ति उन विरोधियों के साथ अवश्य ऐसे सम्मिलित हो गए थे जो अहलेबैत (रसूल के घर वालों) की मित्रता अथवा उनके शिया होने के नाते उस सरकार ही को त्रुटिपूर्ण समझते थे इनमें प्रसिद्ध लोग अम्मार बिन यासिर, मुहम्मद बिन अबुबकर और मालिक अशतर थे। सन् 35 हिजरी में हज़रत अमीर (अली) इस्लामी ख़िलाफ़त पर वैधानिक रूप से अधिकारी हुए तो बनी उमैया के मुक़ाबले में जिन लोगों ने आपका साथ दिया वे सब अली के बिल्कुल निकट रहकर उनकी योग्यता और उनके गुणों से परिचित होकर एवं एनकी शिक्षा से प्रभावित होकर वास्तव में शिया हो गए।

अम्मारे यासिर और मालिक अशतर द्वारा शीईयत इराक़ देश में परिचित हुई। और मुहम्मद बिन अबूबक्र द्वारा मिस्र में शीईयत का प्रचार हुआ। यमन देश वालों को हज़रत अली[अ०] से पहले ही से श्रद्धा थी क्योंकि उन्हीं के चरित्रपूर्ण प्रसार द्वारा वहाँ वाले इस्लाम की सम्पत्ति से मालामाल हुए इस लिए वह भीस बाशिया थे हज़रत अबुज़रे ग़फ़ारी जिन्होंने तीसरे ख़लीफ़ा के समय में शाम देश भ्रमण किया था उनके द्वारा शाम के पहाड़ी प्रान्त जबले तामिल के शहरों में शीईयत का प्रसार हुआ।

इस युग के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण शिया व्यक्तियों में मालिके अशतर, सईद बिन क़ैस हमादानी क़ैस बिन साद इबादह, हज्र बिन अदी, अम्र बिन हुमुक़ ख़िज़ाई और अब्दुल्लाह बिन बुदैल बिन वरक़ए ख़िज़ाई इत्यादि थे जो जेहाद में भी मर्दे मैदान थे।

इनके अतिरिक्त कुमैल बिन ज़्याद, मीसमे तम्मार और रशीदे हिजरी आदि थे जिन्होंने अमीरुलमोमिनीन (हज़रत अली) से शिक्षा पाकर उच्च श्रेणियाँ प्राप्त कीं पवित्र संतान के अतिरिक्त इन्हीं व्यक्तियों द्वारा प्रसारित हुईं। तफ़सीर विज्ञान (कुरआन का विस्तार पूर्वक अर्थ) फ़िक़्ह (धार्मिक विज्ञान) आदि में अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास बहुत प्रसिद्ध थे और भाषा विज्ञान में अबुलअसवद दोएली आपके मुख्य शिष्य थे जिन्होंने कुरआन मजीद पर नुक़ते लगाए। और उसमें मात्राएँ लगाईं उनकी इस सेवा से इस्लामी संसार प्रलय दिवस तक उनका कृतज्ञ रहेगा।

**संकट का युग और उनके विरुद्ध क्रिया**

तहकीम[1] के पश्चात शाम सरकार की शक्ति में बढ़ोतरी हो गई थी और इमाम हसन से संधि होने के बाद मुआविया शाही समस्त इस्लामी संसार पर छा गई यह वह युग था जो शीईयत के लिए अधिक हानिपूर्ण था। हज्र बिन अदी अपने छः साथियों के समेत सूली पर लटका दिए गए अम्र बिन हुमुक़ का सर काट कर नेज़े पर ऊँचा किया गया। हज़्रमियों को क़त्ल व ग़ारत किया गया। ज़्याद बिन अबीह, समरा बिन जुन्दुब और बस्र बिन अरतात ने हज़ारों शियाने अली (वह लोग जो अली के मित्र थे) को तलवार के घाट उतार दिया और यह अवस्था सन् 60 हिजरी तक बाक़ी रही।

उस समय यह पता भी न चलता था कि इस्लामी संसार में शिया वर्ग भी कोई वर्ग है। किन्तु सन् 61 हिजरी में जब कर्बला में हुसैन इब्ने अली ने अपने

(1) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में जब मुआविया, अली से हार रहा था तो उसने अम्रे आस की राय से कुरआन को डंडों में बाँध कर ऊँचा किया परन्तु अली ने कहा कि ये सब चतुरता है किन्तु अली ही की सेना के बहुत से गद्दारों ने लड़ाई बन्द करने पर अली को मजबूर किया और अबुमूसा अशअरी और अम्रे आस अलग-अलग अली और मुआविया की ओर से पंच बने और इन्होंने मिलकर ग़लत निर्णय दिया और इस प्रकार ग़द्दारों द्वारा अली को यह जीती हुई लड़ाई हाथ से जाने देना पड़ी।

अमूल्य बलिदानों की रूपरेखा तैयार की तो संसार से शीईयत की वास्तविक शक्ति अपनी आखों द्वारा उन ७२ व्यक्तियों की सूरतों में देखी जिनके समान अटल दृढ़ एवं पवित्र लोग इस घटना के पूर्व कभी दस की संख्या में भी एक स्थान पर एकत्रित नहीं हुए थे। इसके पूर्व पन्द्रह बीस वर्ष के समय तक किसी में इतना साहस न था जो स्पष्टतः अहलेबैत के गुणों का वर्णन कर सके किन्तु हुसैन के उत्तम बलिदान ने वास्तविक्ता प्रकाशन साहस को वह शक्ति पहुँचाई कि सुलैमान बिन सर्द ख़ज़ाई के साथ हज़ारों आदमी सर से कफ़न बाँध कर मैदान में आ गए। फिर मुख़तार के जेहाद (धार्मिक युद्ध) जो हुसैन के ख़ून का बदला लेने के हेतु थे उनमें शीईयत ने खुल कर अपने जीवन का सबूत दिया। यद्यपि सरकार की असीमित शक्तियों ने इनकी ज़िन्दगियों को नष्ट कर डाला किन्तु वह पवित्र भावना मुर्दा न हुई और अन्त में उसी भावना ने बनी उमैया की ईंट से ईंट बजा दी बनी अब्बास ने इसी शीईयत की छाया के नीचे अपने राज्य की स्थापना की। यह और बात है कि उन्होंने शक्ति प्राप्त करने के पश्चात् अपने प्रण को तोड़ दिया और हज़रत अली की सन्तान से अपने सौतेलेपन के क्रोध का प्रदर्शन किया। शिया मंत्री अबुसलम-ए-ख़िलाल को क़त्ल किया और अबूमुस्लिम अस्फ़हानी के साथ भी यही दुर्व्यवहार किया और फिर रसूल की संतान में से इमामों और सय्यदों पर लगातार इतना अत्याचार किया कि बनी उमैया को भी इतने अत्याचार करने का अवसर न मिला था।

निस्सन्देह बनी उमैया के शासन के पतन और बनी अब्बास के शासन के पैर जमाने के बीच का समय ऐसा था जिसमें इमाम मुहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़र सादिक़ हुए और इन्हीं के समय में अहलेबैत की शिक्षा तथा शियों को अपने धार्मिक विश्वास को फैलाने और पुस्तकें आदि लिखने का अवसर मिला। इस युग में इमामत की समस्या पर वाद विवाद भी होने लगे थे। और हिशाम बिन हकम, हिशाम बिने सालिम, कैस, मासिर, मोमिन अलताक़ आदि भाषा की समस्याओं पर प्रायः पर्याप्त वाद विवाद करते थे। ज़ुरारा बिन ऐईन, मुहम्मद बिन मुस्लिम और अबू बसीर आदि धार्मिक आदेशों की रक्षा करते थे। इस्माईल हुमैरी अपनी कविताओं द्वारा अहलेबैत (रसूल के घर वाले) के गुणों का प्रसार करते थे। और जाबिर बिन हयान तरतूसी भौतिक विज्ञान और अबान बिन तग़लब भाषा विज्ञान में शियों की योग्यता का सिक्का जमा रहे थे। सन 150हि० के पश्चात बनी अब्बास के शासन की हिंसा और अत्याचार बहुत बढ़ गया था और इसकी सीमा यहाँ तक पहुँच चुकी थी कि शिया उलमा अपने इमाम हज़रत मूसा काज़िम का नाम भी नहीं ले सकते थे हालांकि उस समय के इमाम वही थे। यह उलमा (शिया पंडित) इमाम को ''पवित्र व्यक्ति'' के शब्दों से याद करते थे किन्तु उनके बाद इमाम रिज़ा इमाम हुए और उनको मामून रशीद बादशाह ने राजनैतिक कठिनाईयों से विवश होकर अपना उत्तराधिकारी घोषित करके एक अवसर शीईयत के प्रचार का और दे दिया।

ईरान पूर्व से ही शीईयत से परिचित हो चुका था। क्योंकि वहाँ के सम्राट यज़्दजुर्द की सुपुत्री हज़रत शहरबानों इमाम हुसैन की पत्नी इमाम ज़ैनुलआबेदीन की माता थीं। अब इमाम रिज़ा के खुरासान में स्थानीय होने के कारण ईरान देश को अहलेबैत से परिचित होने का अधिक अवसर मिला।

यद्यपि मामून रशीद ने फिर अपनी राजनीति के त्रुटि के कारण इमाम रिज़ा को विष देकर उनके जीवन दीपक को बुझा दिया किन्तु वह प्रभाव जो इमाम रिज़ा के खुरासान में रहने से पड़ चुके थे मिटाये न मिट सकते थे। इसी का फल था कि ईरान का क़ुम नगर अहलेबैत की शान का केन्द्र बन चुका था।

अब शीईयत का प्रसार इतना हो चुका था कि उसके मिटने का ज़ाहिरी तौर पर कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। फिर भी अब्बासी शासन का अत्याचार मामून रशीद के बाद अधिक ज़ोर पकड़ गया जितनी-जितनी शीईयत की उन्नति होती जाती थी उतनी ही सरकार की ओर से अत्याचार बढ़ता जाता था। अब यह तीसरी शताब्दी हिजरी का माध्यमिक काल था जिसमें मुतवक्किल ने अनुभव किया कि शीईयत की ओर खिंचाव का केन्द्रीय बिन्दु शाहीदे कर्बला हज़रत इमाम हुसैन का व्यक्तित्व है। परन्तु उस समय इमाम हुसैन तो उनके सामने न थे कि

उनके विरुद्ध लड़ाई की जाती अतएव इमाम हुसैन की क़ब्र की चिन्ह मिटाने के प्रयत्न किए गए और उनके तीर्थ से रोका गया किन्तु हुसैन के चाहने वालों ने उनकी क़ब्र की यात्रा अपने हाथ पैर और गर्दन कटाकर की और तीर्थ से बाज़ न आये और ना ही अल्लाह ने क़ब्रे हुसैन के चिन्हों को मिटाने की योजना को सफ़ल होने दिया।

बल्कि इसी बीच में जब अत्याचार के बंधन हुसैनी भावनाओं को कुचलने के प्रयत्न में लीन होकर रोटते थे तो वह भावना अधिक शक्तिवान तथा तूफ़ानी होकर उभरती थी। बग़दाद में इमाम मूसा काज़िम और इमाम मुहम्मद तक़ी का क़ैद होना और सामरा में इमाम अली नक़ी और इमाम हसन असकरी का कारागृही होना इराक़ में शीईयत की उन्नति का कारण बना। अतएव तीसरी सदी हिजरी में ईरान के शीईयत केन्द्र क़ुम के अतिरिक्त अब्बासी सरकार की राजधानी बग़दाद में शीईयत का एक केन्द्र मौजूद था। बारहवें इमाम (अन्तिम पथप्रदशक) के चारों नायब (वुकलाए अरबा) इसी बग़दाद में थे और शिया हदीस की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक ''काफ़ी'' इसी बग़दाद में लिखी गई।

**ज्ञान केन्द्र**

शीईयत के दो विद्या केन्द्र थे एक तो क़ुम में दूसरा इराक़ में बग़दाद काज़मैन क़ुर स्कूल के अन्तिम मुख्य प्रतिनिधि शैख़ सदूक़ मुहम्मद बिन अली बिन बाबवैह क़ुम्मी थे धीरे-धीरे इराक़ के केन्द्र ने इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि क़ुम उसके सामने फीका पड़ गया। पाँचवीं शताब्दी हिजरी में बग़दाद ही शीईयत का मुख्य केन्द्र हो गया।

**शिया राज्य**

उस समय में संसार में शियों के राज्यों की भी स्थापना हो गई थी। ईरान और इराक़ में बहाई वंश के सम्राट बहाउद्दौला, अजउद्दौला और सबसे बढ़कर अज़्दुद्दौला दैलगी अपना सिक्का चला रहे थे। हलब में हमदान वंश का राज था जिनका प्रसिद्ध राजा सैफ़ुद्दौला था और मिश्र में फ़ातिमी वंश का राज था जिसकी स्मृति आज भी उस समय से लेकर अब तक एक बड़े विश्वविद्यालय के रूप में मौजूद है जिसका नाम अज़हर युनिवर्सिटी है। यही वह समय था जब खुले आम बग़दाद नगर में मुहर्रम मनाया गया है और सबसे पहला मातमी जुलूस निकला और मिश्र की मस्जिदों की मीनारों से ''हय्या अला ख़ैरिल अमल'' (आओ अच्छे कार्य की ओर) और ''अश्हदु अन्ना अलिय्यन वलिय्युल्लाह'' (मैं गवाही देता हूँ कि अली अल्लाह के वली हैं) की आवाज़ें वायुमण्डल में गूँजी। बग़दाद की राजधानी में शैख़ मुफ़ीद सय्यद मुर्तज़ा इल्मुल हुदा और सय्यद रज़ी जैसे विद्वान पैदा हुए जिनकी शिक्षावृति से हज़ारों शिष्यों ने लाभ उठाया।

**नजफ़ नगर में शिक्षा केन्द्र की स्थापना**

शीईयत की इस उन्नति से विरोधी गण का आग बगोला होना स्पष्ट है अतएव पाँचवीं शताब्दी के मध्य में बग़दाद नगर के मुहल्ला कर्ख़ के शियों पर धावा बोल दिया गया इतने शियों की हत्या की गई कि कई दिन तक दजला नदी का पानी ख़ून से लाल रहा शैख़ुत्ताएफ़ा शैख़ तूसी[अ०र०] जो इस समय तक बग़दाद में थे उनकी पाठशाला और मस्जिद पर आक्रमण किया गया वह मिम्बर (लकड़ी का बना हुआ ऊँचा स्थान जहाँ अध्यापक बैठ कर पाठन कार्य करता था) जिस पर बैठकर वह पाठन कार्य करता था आग से जला दिया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने बग़दाद छोड़कर नजफ़ में शरण ली। इसके पश्चात् नजफ़ शिक्षा केन्द्र बन गया।

**विरोधी सरकार का पतन और शीईयत की महान विजय**

शियों के इस प्रकार मारे जाने का परिणाम विरोधी सरकार के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। बनी अब्बास के शासम में शक्ति हीनता आ गई और थोड़े ही दिनों के पश्चात तातारियों ने इस वंश का नाश कर दिया।

मज़े की बात तो यह है कि उस समय में जबकि तातारी शासन समस्त इस्लामी राज्य के पुर्ज़े उड़ाकर भौतिक रूप से विजयी हो गया था फिर भी वह आध्यात्मिक रूप से शियों से पराजित रहा। वह इस प्रकार कि सम्राट हलाकू के वंश में सुलतान अलजाइतु ख़ुदाबन्दा ने समस्त धार्मों के अध्ययन करने के पश्चात इस्लाम धर्म स्वीकार किया और इस्लाम के सभी सम्प्रदायों

के बीच वाद विवाद की स्थापना करने के पश्चात शीईयत की सत्यता के आगे सर झुका दिया और वह स्वयं शिया हो गया।

**एक और शिक्षा केन्द्र**

अब इराक़ में एक और शिया केन्द्र हिल्ला में स्थापित हुआ था जहाँ फ़िक़्ह की वह पुस्तक जिस पर धर्म सिद्धान्तों का दारोमदार है लिखी गई उसका नाम 'शराएउल इस्लाम' है। फिर यही अल्लामा हिल्ली, उनके बेटे फ़ख़्रुल मुहक़्क़िीन और इब्ने फहदे हिल्ली जैसे विद्वान पैदा हुए।

**ईरान और हिन्दुस्तान में शीईयत की उन्नति**

दसवीं शताब्दी में शीईयत का प्रभाव इतना बढ़ गया कि भारत में भी शिया राज स्थापित हो गए। दक्षिण में क़ुतुब शाही और आदिल शाही राज स्थापित हो गए इसके अतिरिक्त अहमद नगर में भी शीईयत ने पाँव जमा लिये। अशिया मुग़लिया शासन काल में भी बैरम ख़ाँ, मौलाना अबुल फ़तह, फ़ैज़ी, अबुल फ़ज़ल और क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी जैसे मुख्य शिया सरकार की ओर से राजकाज में भागी थे और ईरान में सफ़वी वंश के बादशाहों ने सारे देश पर शीईयत का वह चरित्रपूर्ण प्रभाव डाला कि सदा के लिए वहाँ अशीईयत लुप्त हो गई यह सफ़वी बादशाहों की वह विजय है जिसका उदाहरण विश्व-इतिहास में नहीं मिल सकता और यह विजय तलवार द्वारा नहीं बल्कि सत्यता एवं शांति द्वारा उनको प्राप्त हुई थी। यह मानसिक परिवर्तन कदापि तलवार द्वारा सम्भव न था।

ग्यारहवीं शताब्दी हिजरी में शिया राज अरब में यमन और अजम (जो अरब ने हो) में ईरान और हिन्दुस्तान में दक्षिण में स्थापित थे। अवध में जौनपुर, पूर्वी राजाओं (सलातीने शर्क़ी) के कारण शीईयत का केन्द्र बना हुआ था। और शिया उलमा (विद्वानों) में से ईरान में अल्लामा मजलिसी[अ०रह०] ने शीईयत की वह सेवा की जो अपना आप उदाहरण है।

बारहवीं शताब्दी हिजरी में जौनपुर की कमी को फ़ैज़ाबाद ने पूरा किया और तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब ग़ुफ़रानमआब मौलाना सैयद दिलदार अलीअ०रह० ने इराक़ से विधाध्य के पश्चात लखनऊको अपने धार्मिक प्रचार का केन्द्र बनाया तो उनके तथा उनके वंश के बड़े विद्वानों (आलिमों) के आदेशानुसार अवध सरकार ने शीईयत की वह अमूल्य सेवा की जिसके जीवित चित्र आज भी मौजूद हैं।

13 रजब सन् 1200[हि०] को हिन्दुस्तान में शियों की पहली नमाज़े जमाअत जनाब ग़ुफ़रानमआब ने लखनऊ में पढ़ाई और 17 रजब सन् 1200[हि०] में सबसे पहली नमाज़े जुमा पढ़ाई गई। इस युग में ग़ुफ़रानमआब ने शिया (इल्मे कलाम) की सबसे बड़ी पुस्तक इमादुल इस्लाम की रचना की। इसी शताब्दी के मध्य में इराक़ में शिया फ़िक़्ह (धर्म शास्त्र) का सबसे बड़ा ग्रन्थ जवाहिरुलकलाम लिखा गया। और इसी के पश्चात फ़िक़्ह सिद्धान्त की महत्वपूर्ण पुस्तक किताब रसायल लिखी गई।

अब अवध राज के अतिरिक्त शियों के कई राज बंगाल में स्थापित थे और सिंध में तालपुर वंश के राज हैदराबाद और ख़ैरपुर में स्थापित थे। चौदहवीं शताब्दी के आते-आते यद्यपि अवध राज लुप्त हो चुका था फिर भी ख़ुदमुख़्तार (स्वाधीन) रियासतें रामपुर, मुर्शिदाबाद, बेगनपली, खम्बात और ख़ैरपुर सिंध में स्थापित थी। अब देश के बटवारे के पश्चात हिन्दुस्तान की समस्त रियासतों के साथ शिया रियासतें भी समाप्त हो गईं फिर भी उन का प्रभाव अब भी है। पाकिस्तान में ख़ैरपुर शिया रियासत है। यमन और ईरान के शिया राज अल्लाह की कृपा से अब भी हैं। और शिक्षा केन्द्र ईरान में क़ुम, इराक़ में नजफ़े अशरफ़ और हिन्दुस्तान में लखनऊ किसी न किसी दिशा में अब भी स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त बहुत कम ऐसे स्थान होंगे जहाँ मुसलमान हों और शिया वर्ग के लोग न हों।

यह है उस शिया जाति का संक्षिप्त इतिहास, जिसके नष्ट करने के लिए राज्यों की शक्ति लगाई जाती रही किन्तु यह अपनी सत्यता और हुसैन बलिदान के कारण संसार में अमर हो गई।

